Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

शिवराजविजय में प्रतिपादित भौगोलिक परिदृश्य

डॉ० सुजीत कुमार
असि० प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
इटावा,उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 274-278
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 10 Sep 2020
Published : 20 Sep 2020

सारांशः– व्यास ने भौगोलिक वर्णन के प्रसंग में विभिन्न राज्यों, नगरों, ग्रामों के साथ–साथ पर्वत श्रेणियों, पहाड़ियों, समुद्रों, नदियों आदि का वर्णन किया है, जो सभी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।

मुख्यशब्द – भौगोलिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रियता,शिवराजविजय, महाराष्ट्र, व्यास,संस्कृत।

भारतीय राष्ट्रियता का प्रधान तत्त्व सांस्कृतिक एकता है। सांस्कृतिक एकता के बल पर भारत की राष्ट्रियता का स्वरूप प्रबल और ओजपूर्ण बना हुआ है। विविधता में एकता का आदर्श भारतीय सांस्कृतिक चेतना का सार है। सांस्कृतिक चेतना के अन्तर्गत भौगोलिक परिदृश्य का महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें राज्य, नगर एवं ग्राम, दुर्ग, पर्वत और समुद्र तथा नदियों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है।

भूगोल शब्द से ठव् प्रत्यय लगकर भौगोलिक बना है, जिसका तात्पर्य पृथ्वी के प्राकृतिक तत्त्वों से है, जिसमें पहाड़, देश, नगर, नदी, समुद्र, झील, वनादि समाहित हैं। पं. अम्बिकादत्त व्यास कृत शिवराजविजय में इन्हीं प्राकृतिक तत्त्वों का विस्तृत स्वरूप प्राप्त होता है, जिसके आधार पर इस उपन्यास की भौगोलिक समीक्षा इस प्रकार है–

राज्य–शिवराजविजय की कथा महाराष्ट्र से सम्बन्धित है। व्यास ने शिवाजी को न केवल महाराष्ट्र की अपितु भारतवर्ष की आशा प्रकट करते हुए[1] अनेक राज्यों का उल्लेख किया है। शिवाजी के समय केवल दक्षिण देश को छोड़कर[2] सभी स्थानों पर मुसलमानों का अधिकार था। दिल्ली में औरंगजेब का शासन था,[3] उसी की विजय पताकाएँ– बङ्ग, कलिङ्ग, मगध, अङ्ग, मत्स्य, मिथिला, काशी, कोसल, कान्यकुब्ज, चोल, पाञ्चाल, काञ्ची, शूरसेन, सिन्धु और सौराष्ट्र में फहर रही थीं।[4] शिवाजी के समय समस्त राजपूताने पर मुगलों का अधिकार था, न चाहते हुए भी राजपूत उनकी अधीनता स्वीकार कर रहे थे।[5] दक्षिण में बीजापुर

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

और गोलकुण्डा दो स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य थे,[6] जिस पर शिवाजी निपुणता पूर्वक अधिकार कर लेते हैं। आमेर और मरुदेश के राजा औरंगजेब के सेनापति के रूप में कार्यरत थे। महाराष्ट्र राज्य के कोंकण, खानदेश और कल्याण तीन प्रमुख भाग थे, जिस पर शिवाजी का अधिकार हो जाता है।[7]

इस उपन्यास में व्यास ने भारत के बाहर के देशों का यथातथ्य उल्लेख किया है। गजिनी[8] स्थान निवासी महमूद नामक यवन और गोरदेश[9] से आकर शहाबुद्दीन ने भारत पर आक्रमण किया। कम्बोज देश के लुटेरे गौरसिंह, श्यामसिंह सहित राजपूताने के अन्य लोगों का अपहरण करते थे।[10] शिवाजी के पराक्रम की गाथा हीरात, कम्बोज, गान्धार और समरकन्द तक फैली थी। उनके भेरीनाद पारसीक, चीन, वर्मा, सिंहल तक गूँजते थे।[11]

नगर एवं ग्राम– शिवराजविजय में अनेक नगरों एवं ग्रामों का वर्णन मिलता है। यमुना के किनारे बसी हुई विचित्र वैभवशाली दिल्ली भारत की राजधानी थी।[12] काशी के विश्वनाथ तथा बिन्दुमाधव मन्दिरों को म्लेच्छों ने धूल में मिला दिया था।[13] शिवाजी के निवास स्थान पूना नगर पर शाइस्ता खाँ के अधिकार कर लेने से दिल्लीश्वर और शिवाजी के मध्य युद्ध प्रारम्भ हो जाता है।[14] भोजपुर, पटना नगर सीताकुण्ड, विक्रमचण्डिका, मुद्गलपुर और वर्धमान नगर पूर्वी भारत के प्रमुख स्थान थे।[15] राजूताना देश में उदयपुर नाम की एक राजधानी थी, जहाँ के क्षत्रियकुल श्रेष्ठ राजाओं ने यवनों की अधीनता को स्वीकार नहीं किया[16] अम्बर देश के राजा महाराज 'जयसिंह ने जयपुर नगर की स्थापना की थी।[17] सूरत नगर में भगवान् रामचन्द्र का मन्दिर था।[18] इसी नगर पर शिवाजी के सेनापति स्वर्णदेव ने आक्रमण किया था। द्वारका से तीर्थयात्री जहाज द्वारा मुम्बापुरी होकर रामेश्वर की यात्रा के लिये जाते थे। अयोध्या प्रान्त के क्षत्रिय पूर्णतया पराजित हो चुके थे।[19] महाराष्ट्र से देहली के मार्ग में अहमद नगर, विदर्भदेश, इन्दौर, उज्जयिनी, वृन्दावन एवं मथुरा नगर पड़ता था।[20] शिवाजी ने राज्य स्थापना के अनन्तर सतारा नगरी को अपना निवास स्थान बनाया था।[21] इस प्रकार व्यास ने शिवराजविजय में राज्य के साथ–साथ नगर एवं ग्राम के स्वरूप को चित्रित किया है।

दुर्ग– शिवाजी के समय राज्यों की .ढ़ता दुर्गो पर आधारित थी। व्यास ने इस उपन्यास में अनेक दुर्गो का वर्णन किया है। व्यास द्वारा दिया गया दुर्गो का विवरण ऐतिहासिक तथ्यों से कुछ भिन्न है। शिवाजी के कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित तीन मुख्य दुर्ग हैं–

प्रतापदुर्ग– यह दुर्ग भीमा नदी के किनारे बना है[22], जिसकी शिखरें चन्द्रमा को चूमती हुई दिखायी गयी हैं।[23] इसी किले से शिवाजी ने अफजल खाँ को पराजित किया था।[24] शाइस्ता खाँ द्वारा प्रेषित दूत रूप में उपस्थित गोपीनाथ पं. ने इसी दुर्ग में शिवाजी–अफजल खाँ से मिलने सम्बन्धी मन्त्रणा किया था।[25] गौरसिंह संन्यासी वेष में इसी दुर्ग के द्वारपाल की परीक्षा लेता है।[26] शिवाजी दिल्ली से वापस आने पर सर्वप्रथम प्रताप

दुर्ग में प्रवेश किये थे। ब्रह्मचारीगुरु अपने सेवकों के साथ इसी दुर्ग के समीप निवास करते थे।[27]

तोरणदुर्ग–तोरणदुर्ग की घाटी के उद्यान में घूमकर रघुवीरसिंह अपना मन बहलाता है।[28] इसी दुर्ग के समीप हनुमान् जी का सु.ढ़ तथा सुन्दर मन्दिर था।[29] तोरण दुर्ग में शिवाजी का दुर्गाध्यक्ष रहता है। इसी दुर्ग में रोशनआरा को दुर्गाध्यक्ष की निगरानी में आदर पूर्वक रखा गया है।[30] देवशर्मा, सौवर्णी सहित तोरणदुर्ग के समीप हनुमान् जी के मन्दिर में रहना स्वीकार करते हैं।[31] रघुवीरसिंह और सौवर्णी मिलन इसी दुर्ग की वाटिका में होता है। शिवाजी का पत्र सिंहदुर्ग से तोरणदुर्ग रघुवीर सिंह ही पहुँचाता है।[32]

सिंहदुर्ग–यह दुर्ग नीरा नदी के समीप पर्वत की चोटी पर बना था।[33] इस दुर्ग से शिवाजी रघुवीरसिंह को पत्र लेकर तोरणदुर्ग के दुर्गाध्यक्ष के पास भेजते हैं। औरंगजेब शाइस्ता खाँ को भेजकर शिवाजी से पूना नगर छीन लेता है और उनके निवास स्थान पर सपरिवार शाइस्ता खाँ निवास करता है।[34] पूना नगर के समीप स्थित सिंहगढ़ में अपनी सेना सहित शिवाजी रह रहे हैं। सिंहगढ़ से थोड़ी दूर भूषणकवि और शिवाजी का परस्पर वार्तालाप होता है।[35] शिवाजी शाइस्ता खाँ पर आक्रमण करने के लिये सिंहदुर्ग का प्रयोग करते हैं और पुनः वापस सिंहदुर्ग में आते हैं।[36] मराठा सैनिक शाइस्ता खाँ सहित यवन सेना को परास्त करके सिंहदुर्ग पर अधिकार कर लेते हैं।[37]

इन दुर्गो के अतिरिक्त कल्याणदुर्ग,[38] राजदुर्ग,[39] चित्तौड़दुर्ग,[40] रायगढ,[41] चाकण,[42] पन्हाला,[43] यवनादि अनेक दुर्गो का उल्लेख प्राप्त होता है। रुद्रमण्डलदुर्ग[44] का भी उल्लेख मिलता है, जो सम्भवतः एक काल्पनिक नाम है। जयसिंह से सन्धि करने के उपरान्त शिवजी ने बीजापुर के फाल्टन और टट्टोर नामक किलों को जीता था। सम्भवतः व्यास ने इनके लिये ही रुद्रमण्डल–दुर्ग का नाम लिया होगा।[45]

पर्वत और समुद्र–कथास्थान महाराष्ट्र के पर्वत बहुल होने पर भी व्यास ने किसी पर्वत का नामोल्लेख नहीं किया है। शिवाजी के राज्य विस्तार में विन्ध्य पर्वत का नाम आता है। पूना नगर के दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में पहाड़ियों का वर्णन मात्र मिलता है।[46] इसी प्रसंग में पूर्व और पश्चिम समुद्र का वर्णन मिलता है।[47]

नदियाँ–व्यास ने अपने उपन्यास में भारत की अनेक नदियों का उल्लेख किया है। गङ्गा नदी के किनारे वाराणसी नगर स्थित है।[48] यमुना के किनारे दिल्ली नगरी बसी है।[49] सिन्धु नदी भारत की सीमा को पृथव् करती है, जिसे लाँघकर महमूद ने भारत पर बारह बार आक्रमण किया था।[50] शिप्रा नदी के किनारे जसवन्तसिंह ने औरंगजेब को युद्ध में निर्निमेष, आत्मविस्मृत कर दिया था।[51] गङ्गा और गण्डक नदियों के तट पर विराजमान हरिहरनाथ का मन्दिर है।[52] पद्मा और ब्रह्मपुत्र पूर्व बङ्गाल में बहती है। ब्रह्मपुत्र नद ब्रह्मदेश को भारतवर्ष से पृथव् करता हुआ भूमिभाग को सींचता है।[53] भीमा नदी पश्चिम समुद्र की ओर से

निकलकर पूर्व समुद्र की ओर बहती है। सिंहदुर्ग से पूर्व दिशा में नीरा नदी बहती है। यहाँ एक अन्य प्रसंग में अमृतोद नामक तालाब का वर्णन भी मिलता है, जिसमें गौरसिंह, शयमसिंह के स्नान करने का उल्लेख है।

इस प्रकार व्यास ने भौगोलिक वर्णन के प्रसंग में विभिन्न राज्यों, नगरों, ग्रामों के साथ–साथ पर्वत श्रेणियों, पहाड़ियों, समुद्रों, नदियों आदि का वर्णन किया है, जो सभी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।

सन्दर्भ–

1 शि.वि., नि.प्र., पृ.– 78

2 वहीं, नि.प्र., पृ.–74

3.वहीं, नि.प्र., पृ.–74

4 शि.वि., नि.ष., पृ.–81

5 वहीं, नि.ष., पृ.–98

6 वहीं, नि.अ., पृ.–224–27

7 वहीं, नि.प्र., पृ.59–62

8 वहीं, नि.प्र., पृ.–68

9 वहीं, नि.तृ., पृ.–277–79

10 डॉ. कृष्ण कुमार– पं. अम्बिकादत्त व्यास– एक अध्ययन, पृ.–153

11 शि.वि., नि.द., पृ.– 162–169

12 वहीं, नि.ष., पृ.–63

13 वहीं, नि.च., पृ.–402

14 वहीं, नि.द्वि., पृ.–187

15 वहीं, नि.तृ., पृ.–270

16 वहीं, नि.न., पृ.–26

17 वहीं, नि.अ, पृ.–248

18 वहीं, नि.ष., पृ.–57

19 वहीं, नि.द., पृ.–145

20 वहीं, नि.द्वा., पृ.–350

21 शि.वि., नि.द्वि., पृ.–109

22 वहीं, नि.द्वि., पृ.–205

23 वहीं, नि.द्वि., पृ.–109

24 वहीं, नि.द्वि., पृ.–212

25 वहीं, नि.द्वि., पृ.—123
26 वहीं, नि.अ., पृ.—250
27 वहीं, नि.स., पृ.—118
28 शि.वि., नि.स., पृ.—119
29 वहीं, नि.स., पृ.—165
30 वहीं, नि.तृ., पृ.—338
31 वहीं, नि.च., पृ.—343
32 वहीं, नि.स., पृ.—167
33 वहीं, नि.प., पृ.—2—3
34 वहीं, नि.प., पृ.—3
35 वहीं, नि.स., पृ.—191
36 वहीं, नि.स., पृ.—192
37 शि.वि., नि.द्वि., पृ. 204
38 वहीं, नि. अ., पृ.—269—272
39 वहीं, नि.तृ., पृ.—270
40 वहीं, नि.द्वि., पृ.—204
41 वहीं, नि.ष., पृ.—86
42 वहीं, नि.स., पृ.—169
43 वहीं, नि.न., पृ.—85
44 डॉ. कृष्ण कुमार—पं. अम्बिकादत्त व्यास—एक अध्ययन, पृ.—154
45 शि.वि., नि.स., पृ.—167
46 वहीं, नि.द्वि., पृ.—108
47 वहीं, नि.प्र., पृ.—71
48 वहीं, नि.द., पृ.—146
49 शि.वि., नि.प्र., पृ.—62—66
50 वहीं, नि.ष., पृ.—92
51 वहीं, नि.द्वि., पृ.—187
52 वहीं, नि.द्वि., पृ.—190
53 वहीं, नि.स., पृ.—167